बाध्य नहीं हैं, वरन् स्वेच्छामय कर्म करने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं। अतः अधर्म का प्राबल्य एवं यथार्थ धर्म का लोप होने पर वे स्वेच्छा से अवतीर्ण होते हैं। धर्म का प्रतिपादन वेदों में है। अतएव वैदिक विधान का भलीभाँति पालन करने में हुआ प्रमाद अधर्म का कारण सिद्ध होता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार धर्म का विधान साक्षात् श्रीभगवान् ने किया है। एकमात्र श्रीभगवान् ही किसी भी धर्म-व्यवस्था का प्रणयन कर सकते हैं। वेदों के सम्बन्ध में यह सर्वमान्य है कि ब्रह्मा के हृदय-गह्वर में उनका संचार श्रीभगवान् ने किया। इस दृष्टि से धर्म के विधान साक्षात् भगवदाज्ञा हैं **(धर्मं तु साक्षात्भगवत्प्रणीतम्)**। भगवद्गीता में आद्योपान्त इस तत्त्व का विशद वर्णन हुआ है। वेदों का प्रयोजन श्रीभगवान् की आज्ञा के अनुसार धर्म-स्थापना करना है और गीता के अन्त में तो स्वयं श्रीभगवान् की आज्ञा है कि उनके शरणागत हो जाना ही धर्म है। वैदिक सिद्धान्त जीव को पूर्ण भगवत्-शरणागति की ओर अग्रसर करते हैं; इसलिए जब-जब असुर इनके मार्ग में विघ्न उपस्थित करते हैं तो श्रीभगवान् का आविर्भाव होता है। श्रीमद्भागवत से हम जानते हैं कि बुद्धदेव भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार हैं। उनका प्रादुर्भाव उस काल में हुआ जब विषयपरायणता सर्वव्यापी हो गयी थी और विषयी व्यक्ति भी कपटपूर्वक वेदप्रमाण की आड़ ले रहे थे। यह सत्य है कि वेदों में विशिष्ट प्रयोजन के लिए पशुबलि के कतिपय नियामक विधि-विधान हैं; पर उस समय आसुरी स्वभाव वाले वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध पशुबलि कर रहे थे। इस अनर्थ का निवारण करके वैदिक सिद्धान्त अहिंसा को स्थापित करने के लिए बुद्ध प्रकट हुए। इस प्रकार प्रत्येक अवतार का शास्त्रसम्मत विशिष्ट प्रयोजन होता है। अतएव शास्त्र-प्रमाण के बिना किसी को भी अवतार के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। श्रीभगवान् केवल भारतभूमि पर ही प्रकट होते हों, ऐसा नहीं। वे स्वेच्छानुसार किसी भी देशकाल में अवतरण कर सकते हैं, परन्तु प्रत्येक अवतार में वे धर्म का उतना ही प्रवचन करते हैं, जो उस देशकाल के मनुष्य हृदयंगम कर सकें। सबका मूल प्रयोजन यही है कि जनता में भगवद्भावना और धर्मपरायणता का संचार किया जाय। श्रीभगवान् समय-समय पर साक्षात् स्वयं प्रकट होते हैं; कभी-कभी अपने प्रामाणिक प्रतिनिधि को पुत्र अथवा दास के रूप में भेजते हैं; अथवा स्वयं ही किसी गोपनीय रूप में इस धराधाम पर पधारते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुन जैसे महाभागवत को ही सुनाई गयी, क्योंकि संसार के अन्य भागों के साधारण मनुष्यों की तुलना में वह कहीं उत्तम था। दो और दो प्राथमिक कक्षा में भी चार के बराबर होते हैं और स्नातकोत्तर कक्षा में भी। परन्तु प्राथमिक कक्षा में गणित की प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है, जबकि उच्च कक्षा में उच्च स्तर का गणित पढ़ाया जाता है। इसी प्रकार सभी भगवत्-अवतारों द्वारा समान सिद्धान्तों की शिक्षा का प्रसारण किया जाता है, केवल देशकाल के भेद से वे उच्च-निम्न प्रतीत होते हैं। जैसा वर्णन किया जायगा, धर्म के वरेण्य सिद्धान्तों का प्रारम्भ वर्णाश्रम आचार से होता है। सब अवतारों का एकमात्र लक्ष्य सर्वत्र कृष्ण